ट

टं [ट] मूर्ध-स्थानिय व्यंजन वर्ग-विशेष; (प्रामः, प्राग।)

टंकु [टङ्कु] १ तलवार आदि का अग्र भाग; (प्राह १,

१—पत्र १५)। २ एक प्रकार का सिक्का; (अश ९२;

उषा ९३)। ३ एक दिशा में झुका पर्वत; (प्राहा ९,९—)

पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी ; (से ५, ३५ ; उप पृ ३१५)। ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल ; (पिंग)। ६ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

कं पुं [दे] १ तलवार, खड्ग ; २ खात, खुदा हुआ जलाशय ; ३ जङ्घा, जाँघ ; ४ भित्ति, भींत ; ५ तट, किनारा ; (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल ; (दे ४, ४ ; से ५, ३५)। ७ वि. छिन्न, छेरा हुआ, काटा हुआ ; (दे ४, ४)।

टंकण पुं [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति ; (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पुं [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी ; (श्रा २०)।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ ; (पाश्व) । २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ ; (ती ४३) ।

टंकार पुं [टङ्कार] धनुष का शब्द ; (भवि) ।

टंकार पुं [दे] ओजस्, तेज ; (गडड) ।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ; (दे ४, १) ।

टंकिअ वि [टङ्कित] टाँकी से काटा हुआ ; (दे ४, ५०) ।

टंबरय वि [दे] भार वाला, गुरु, भारी ; (दे ४, २) ।

टक्क पुं [टक्क] देश-विशेष ; (हे १, १६५) ।

टक्कर पुं [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात ; (सुर १२, ६७ ; वव १) ।

टक्कारो स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फल ; (दे ४, २) ।

टगर पुं [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष ; २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, पर्दा ; (दे ४, १) ।

टप्पर वि [दे] विकराल कर्ण वाला, भयंकर कान वाला ; (दे ४, २ ; सुपा ५२० ; कप्पू) ।

टम पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह ; (दे ४, १) ।

टयर देखो टगर ; (कुमा) ।

टलटल अक [टलतलाय्] 'टल टल' आवाज करना । वक्र—टलटलंत ; (प्रासू १६३) ।

टलटलिय वि [टलतलित] 'टल टल' आवाज वाला ; (उप ६४८ टी) ।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ ; (पाश्व) । २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ ; (ती ४३) ।

टंकार पुं [टङ्कार] धनुष का शब्द ; (भवि) ।

टंकार पुं [दे] ओजस्, तेज ; (गडड) ।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ; (दे ४, १) ।

टंकिअ वि [टङ्कित] टाँकी से काटा हुआ ; (दे ४, ५०) ।

टंबरय वि [दे] भार वाला, गुरु, भारी ; (दे ४, २) ।

टक्क पुं [टक्क] देश-विशेष ; (हे १, १६५) ।

टक्कर पुं [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात ; (सुर १२, ६७ ; वव १) ।

टक्कारो स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फल ; (दे ४, २) ।

टगर पुं [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष ; २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, पर्दा ; (दे ४, १) ।

टप्पर वि [दे] विकराल कर्ण वाला, भयंकर कान वाला ; (दे ४, २ ; सुपा ५२० ; कप्पू) ।

टम पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह ; (दे ४, १) ।

टयर देखो टगर ; (कुमा) ।

टलटल अक [टलतलाय्] 'टल टल' आवाज करना । वक्र—टलटलंत ; (प्रासू १६३) ।

टलटलिय वि [टलतलित] 'टल टल' आवाज वाला ; (उप ६४८ टी) ।

"अइसिक्खिअावि न मुञ्चइ, अणयं टारव्व टारत्तं " (श्रा २७)। २ टट्टु, छोटा घोड़ा ; (उप १५५)।

टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल ; (दस ७)।

टिट्टि } [दे] देखो टेंटा ; (भवि)। **°साला** स्त्री **टिट्टा** } [°शाला] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा ; (सुपा ४६५)।

टिंम्बरु } पुं [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ ; (दे ४, **टिंम्बरुअ** } ३ ; उप १०३१ टी ; पाश्व)।

टिंम्बरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो ; (पि २१८)।

टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक ; २ सिर का स्तबक, मस्तक पर रखा जाता गुच्छा ; (दे ४, ३)।

टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक-विभूषित ; (कप्पू)।

टिग्वर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ४, ३)।

टिट्टिभ पुं [टिट्टिभ] १ पक्षि-विशेष । २ जल-जन्तु विशेष ; (सुर १०, १८५)। स्त्री— **°भी** ; (विपा १, ३)।

टिट्टियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि टि' आवाज करने को सिखलाना । टिट्टियावेइ ; (गाथा १, ३)। कवक्र—टिट्टियावेज्जमाण ; (गाथा १, ३—पत्र ६४)।

टिप्पणय न [टिप्पणक] विवरण, छोटी टीका ; (सुपा ३२४)।

टिप्पी स्त्री [दे] तिलक, टीका ; (दे ४, ३)।

टिरिटिल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना । टिरिटिल्लइ ; (हे ४, १६१)। वक्र—टिरिटिल्लंत ; (कुमा)।

टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना, विभूषित करना । टिविडिक्कइ ; (हे ४, ११५ ; कुमा)। वक्र—टिविडिक्कंत ; (सुपा २८)।

टिविडिक्किअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत ; (पाश्व)।

टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह ; (दे ४, ३ ; प्रासू १४२ ; १४३)।

टसर न [दे] विमोटन, मोड़ना ; (दे ४, १)।

टसर पुं [त्रसर] टसर, एक प्रकार का सूता ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस ; (दे ४, १)।

टार पुं [दे] अधम अश्व, हठी घोड़ा ; (दे ४, २)।

टुंटुप्पण अक [टुण्टुणाय्] 'टुन टुन' आवाज करना ।

वक्र— टुंटुप्पणंत ; (गा ६८५ ; काप्र ६६५) ।

तुंबय पुं [दे] आघात-विशेष ; गुजराती में 'ठुंबा' ; (सुर १२, ६७) ।

तुट्ट अक [त्रुट्] टूटना, कट जाना । तुट्टइ ; (पिंग) । वक्र—तुट्टंत ; (से ६, ६३) ।

टूवर पुं [तूवर] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी ; २ जिसने दाढ़ी मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार ; (हे १, २०५ ; कुमा) ।

टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा ; (दे ४, ३) ।

टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश ; (दे ४, ३) ।

टोक्कण } न [दे] दारु नापने का बरतन ; (दे ४, ४) ।

टोक्कणखंड } **टोपिआ** स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६३) ।

टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष ; (स ४५१) ।

टोप्पर पुं [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टापा ; (पिंग) ।

टोल पुं [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष ; २ पिशाच ; (दे ४, ४ ; प्रासू १६२) ।

°गइ स्त्री [**°गति**] गुरु-वन्दन का एक दोष ; (पव २) । **°गइ** वि [**°कृति**] प्रशस्त आकार वाला ; (राज) ।
टोलंब पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड़ ; (दे ४, ४) ।

इअ सिरिपासइद्द महणवम्मि ठयाराइसद्द संकलणो अट्ठारहमो तरंगो समत्तो ।